राष्ट्रीय संस्कृति के लिए शिक्षा

• न्गूगी वा थ्योंगो

केन्या के प्रसिद्ध लेखक न्गूगी वा थ्योंगो अपने जनपक्षधर लेखन के कारण केन्याई शासक वर्गों की आँखों में हमेशा चुभते रहे। अपने लेखन के कारण उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया और वह वर्षों तक जेल में रहे। 22 वर्षों का निर्वासन झेलकर पिछले वर्ष वह अपने वतन वापस लौटे थे। केन्याई जनता ने अपने प्यारे लेखक को सिर-आँखों पर बिठाया मगर जालिम शासकों को अभी तसल्ली नहीं हुई थी। न्गूगी के वापस आने के कुछ दिन बाद ही 11 अगस्त को न्गूगी और उनकी पत्नी पर हमला किया गया। पतनशील शासक वर्गों की सड़न का अंदाजा इस बात से चलता है कि हमलावरों ने 58 वर्षीय नजीरी के साथ बलात्कार किया। उन्होंने न्गूगी को पीटा, सिगरेट से जलाया और उनके घर में लूटपाट मचायी। इसी से पता चलता है कि शासक वर्गों के मन में न्गूगी की जगाने वाली कलम का भय किस कदर समाया हुआ था। इस जघन्य अपराध की निन्दा के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। इस हादसे के बाद भी न्गूगी और नजीरी टूटे नहीं और इस हमले के खिलाफ संघर्ष करते रहे। हम उनके इस संघर्ष और कभी हार न मानने की जिद को तहे-दिल से सलाम करते हैं।

न्गूगी ने भाषाई गुलामी के खिलाफ व्यापक रूप से लिखा है और भाषा तथा संस्कृति के धरातल पर साम्राज्यवाद की हरकतों को कारगर ढंग से बेनकाब किया है। उन्होंने उपनिवेश रहे देशों की जनता के जागरण के लिए मातृभाषा की महत्ता पर रोशनी डाली है। हम यहां उनकी पुस्तक ***'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता'*** *के* ***'राष्ट्रीय संस्कृति के लिए शिक्षा'*** *नामक अध्याय का एक अंश दे रहे हैं।*

-सम्पादक

जनता की संस्कृति उन मूल्यों की वाहक होती है जिनका निर्माण किसी समुदाय विशेष द्वारा अपने आर्थिक और राजनितिक जीवन के दौरान किया जाता है। मूल्यों से मेरा अभिप्राय सही और गलत (नैतिक मूल्य), अच्छा और बुरा (आचरण संबंधी मूल्य) तथा सुंदर और असुंदर (सौंदर्यपरक मूल्य) की उनकी अवधारणा से है।

जिन मूल्यों को वे अपनाते हैं वे उस समुदाय की चेतना के हैं, उनकी विश्व-दृष्टि के हैं, उनकी खुद की सामूहिक और निजी छवि के अर्थात उस समुदाय के व्यक्तित्व के आधार हैं, एक ऐसे जन के रूप में उनकी पहचान है जो खुद को तथा विश्व के साथ अपने संबंधों को एक खास तरीके से देखते हैं।

यह कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है जो आर्थिक ढाँचे द्वारा राजनीतिक तथा अन्य संस्थाओं के उदय के साथ और क्रमिक रूप से संस्कृति, मूल्य, चेतना और अस्मिता के उदय के साथ सुव्यवस्थित कदमों और छलाँगों में घटित हो। ये प्रक्रियाएँ प्राय: कमोबेश साथ-साथ विकसित होती हैं जिसमें कोई एक प्रक्रिया एक ही समय में अन्य कई प्रक्रियाएँ पैदा करती है। यह कोई एक ही दिशा का बहाव नहीं है जिसमें यह कहा जाए कि आर्थिक जीवन राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की ओर प्रवाहित हो जाता है। यह एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है। लोग अपने मूल्यों को, जिस तरह देखते हैं, वह उनके खुद को देखने के तरीके को प्रभावित करता है और इसी क्रम में यह उनके सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन तथा अंतत: प्रकृति के साथ उनके संबंधों के नजरिये को प्रभावित करता है। यह एक जाटिल प्रक्रिया है, जिसमें चीजें एक-दूसरे पर अपनी क्रिया द्वारा जो निर्मित करती हैं, उसे हम समाज कहते हैं।

इस समूचे विन्यास में शिक्षा की क्या भूमिका है? आदर्श रूप में कहें तो शिक्षा का अर्थ लोगों को उस विश्व का ज्ञान कराना है, जिसमें वे रहते हैं-उन्हें यह बताना है कि यह विश्व उन्हें किस तरह आकार देता है और वे किस तरह विश्व को आकार देते हैं। शिक्षा को एक ऐसी संस्कृति का संचारण करना चाहिए जो लोगों के मन में इस चेतना को अच्छी तरह बैठा दे कि मनुष्य अपनी श्रमशक्ति द्वारा अपने सामाजिक परिवेश का निर्माता है और जिस प्रकार वह प्रकृति पर प्रभाव डालकर उसे बदल देता है, उसी प्रकार वह अपने सामाजिक परिवेश पर प्रभाव डालकर उसे बदल सकता है और इस प्रक्रिया में खुद को बदल सकता है। प्रारंभ में प्रकृति के साथ मनुष्य की मुठभेड़ उसे एक अबोधगम्य विरोधी शक्ति मान कर होती थी और यह क्रम तब तक चलता रहा, जब तक मनुष्य को प्रकृति के अदृश्य नियमों (मसलन गुरुत्वाकर्षण) की जानकारी नहीं हो गई और तब इसने इसपर काबू पाया और इसे अपना दास बना लिया। आज पूँजीवाद के अधीन एक विरोधी शक्ति के रूप में मनुष्य का सामाजिक परिवेश मनुष्य से मुठभेड़ करता है। अंतिम तौर पर इसके छुपे नियमों को जान लेने के बाद वह इस पर विजय पा लेता है, इससे आगे बढ़ जाता है और फिर एक नए मानव के लिए एक ऐसे नए विश्व की रचना करता है, जिसमें सामाजिक और प्राकृतिक दोनों परिवेश मनुष्य के गुलाम होते हैं। शिक्षा को चाहिए कि वह

लोगों के अंदर इस बात का विश्वास पैदा करे कि वे इस पृथ्वी पर एक नया स्वर्ग बना सकते हैं।

लेकिन हम किस तरह की शिक्षा की बात कर रहे हैं? शिक्षा का हथियार किन हाथों में है, इस पर बहुत सारी बातें निर्भर करती हैं, क्योंकि शिक्षा का इस्तेमाल यथार्थ को उजागर करने की बजाय यथार्थ को ढाँपने के लिए, मनुष्य और मनुष्य तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच के संबंधों को रहस्यमय बनाने के लिए भी किया जा सकता है। डिकेन्स ने अपने उपन्यास 'हार्ड टाइम्स' में बहुत स्पष्ट रूप में दिखाया है कि किस प्रकार यथार्थ को रहस्यमय अथवा प्राय: दुरूह बनाने के लिए शिक्षा का इस्तेमाल किया जा सकता है। यह कहानी एक स्कूल की है, जिसे किसी औद्योगिक नगरी में मिस्टर टामस ग्रैण्डग्राइंड चलाते हैं। स्कूल में लोगों को तथ्यों के अलावा और कुछ भी नहीं पढ़ाया जाता है ताकि वे 'मानव प्रकृति, मानवीय संवेगों, आकांक्षाओं और आशंकाओं, संघर्षों और पराजयों, सुखों और दुखों तथा आम पुरुषों-महिलाओं के जीवन और मृत्यु' को लेकर अचंभित होनेवाली आदत से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकें। स्कूल में दो पात्र हैं सिसी ज्यूप और ब्लित्जर। सिसी ज्यूप नामक लड़की बचपन से घोड़ों के बीच रही है क्योंकि उसके पिता सर्कस में काम करते हैं। इसके विपरीत, ब्लित्जर ने कभी कोई घोड़ा देखा ही नहीं है। कक्षा में मिस्टर ग्रैण्डग्राइण्ड ने सिसी ज्यूप से कहा कि वह घोड़े की परिभाषा बताए पर इस अचानक किए गए सवाल से उस लड़की की समझ में ही नहीं आया कि घोड़े को कैसे परिभाषित करे और वह जवाब देने में असमर्थ रही। टामस ग्रैण्डग्राइण्ड ने यह ऐलान करने के बाद कि वह लड़की घोड़े जैसे 'एक अत्यंत साधारण जानवर की परिभाषा नहीं बता सकी', अब ब्लित्जर नामक उस लड़के से घोड़े का वर्णन करने को कहा जिसने कभी घोड़ा देखा भी नहीं था।

लड़का खड़ा हुआ और उसने बड़ी बहादुरी के साथ घोड़े की परिभाषा बताना शुरू किया जिसे उसने किताबों से याद किया था–'चार पैरों वाला, घास खाने वाला, चालीस दाँतों से लैस जिनमें से चौबीस चबाने वाले दाँत.... आदि आदि।'

अध्यापक ने लड़की की ओर मुखातिब होकर कहा : "अब तो तुम जान गई कि घोड़ा किसे कहते हैं।"

लेकिन वास्तव में और व्यवहार में उस लड़की सीसी ज्यूप को घोड़ों के बारे में सारी जानकारी है न कि ब्लित्जर को। लड़की को घोड़े की वास्तविकता मालूम है क्योंकि उसने उसे छुआ है, चारा खिलाया है, उस पर सवारी की है और उनके बीच रही है। ब्लित्जर घोड़े को केवल शब्दों के माध्यम से जानता है, उसके दिमाग में एक अमूर्त तस्वीर है। यहाँ शिक्षा का इस्तेमाल यथार्थ को रहस्यमय और दुरूह बनाने के लिए किया जा रहा है।

ऐसा क्यों है? अगर हम अपने परिकल्पित मानव समुदाय अथवा समाज की ओर पलट कर देखें तो हम पाएँगे कि आर्थिक ढाँचा एक वर्गीय ढाँचा भी है, जिसमें कुछ लोगों का उत्पादन साधनों और इस प्रकार उत्पादक शक्तियों(मानव श्रम-शक्ति, श्रम के उपकरण, कच्चा माल और प्राकृतिक संसाधन) पर स्वामित्व है, जबकि अन्य लोगों का इन साधनों पर स्वामित्व नहीं है। दूसरे शब्दों में कहें तो अपने जीवन साधनों के उत्पादन के दौरान प्रकृति के साथ क्रियाशील होने की प्रक्रिया में लोग उत्पादन के लिए अलग-अलग स्थितियों में खड़े दिखाई देते हैं। उत्पादन के संबंध, मनुष्य और मनुष्य तथा मनुष्य और उत्पादन शक्तियों (श्रम तथा श्रम के उपकरण तथा श्रम के पदार्थ) के बीच समानता के संबंध नहीं हैं बल्कि ये संबंध प्राय: शोषक तथा शोषित, उत्पीड़क तथा उत्पीड़ित के संबंध हैं। दास प्रथा वाले समाज में दासों के मालिकों के पास सब कुछ होता था। सामंती समाज में कुलीन घरानों के लोग जमीन के मालिक होते हैं और किसान काश्त पर लेकर उनके खेत जोतते हैं। एक पूँजीवादी समाज में पूँजी के स्वामी के पास उत्पादन के सभी साधनों का स्वामित्व होता है और मजदूर के पास केवल श्रमशक्ति होती है। फिर भी गुलाम, किसान या मजदूर ही सभी तरह का उत्पादन करते हैं, वही उस समाज के लिए सम्पदा तैयार करते हैं और अपने पसीने से उत्पादित इस संपदा के वितरण पर उनका नियंत्रण नहीं रहता। चूँकि इस तरह के समाजों में आर्थिक ढाँचा एक वर्गीय ढाँचा भी होता है इसलिए राजनीतिक और सांस्कृतिक सभी संस्थाओं पर इस या उस वर्ग की मुहर लगी होती है। शिक्षा और संस्कृति इन वर्गीय विभेदों को उस समाज की आर्थिक बुनियाद में व्यक्त करती है। दरअसल शिक्षा और संस्कृति वर्गीय शिक्षा और वर्गीय संस्कृति होती है।

इस प्रकार वर्गों के अस्तित्व वाले समाज में अथवा ऐसी स्थिति में जहाँ एक राष्ट्र या नस्ल या वर्ग पर दूसरे राष्ट्र या नस्ल या वर्ग का प्रभुत्व है, वहाँ कोई ऐसी निष्पक्ष शिक्षा नहीं हो सकती जो किसी निष्पक्ष संस्कृति का प्रसार करे। किसी उत्पीड़क वर्ग अथवा राष्ट्र अथवा नस्ल के लिए शिक्षा उत्पीड़न का उपकरण होती है अर्थात वह मौजूदा समाज व्यवस्था को बनाए रखने का उपकरण होती है, जबकि संघर्षशील वर्ग, नस्ल अथवा राष्ट्र के लिए यह मुक्ति का उपकरण बन जाती है अर्थात यथास्थिति के समाजिक रूपान्तरण का हथियार बन जाती है। इस तरह के वर्गीय समाजों में दरअसल दो तरह की शिक्षा के बीच भीषण संघर्ष चलता है जो दो परस्परविरोधी संस्कृतियों का प्रसार करती है और दो परस्परविरोधी चेतना अथवा विश्वदृष्टि अथवा विचारधाराओं की वाहक हैं।

मैं इसे और स्पष्ट करना चाहूँगा। मान लीजिए ख के ऊपर क बैठा हुआ है। ख ही क को ढोता है, उसे खाना खिलाता है और कपड़े देता है अब क किस तरह कि शिक्षा ख को देना चाहेगा? दूसरे शब्दों में कहें तो किस तरह की संस्कृति और वैचारिक चेतना से वह ख को लैस करना चाहेगा? क चाहेगा कि ख को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे ख के लिए यह समझना मुश्किल हो जाए कि वही क को ढो रहा है, उसका पालन-पोषण कर रहा है और उसे कपड़े-लत्ते दे रहा है। क चाहेगा कि ख को ऐसे दर्शन का ज्ञान कराया जाए जो यह बताता हो कि दुनिया बदलती नहीं है। क यह चाहेगा

कि ख को ऐसा धर्म पढ़ाया जाए जो उसे बताये कि यह स्थिति भगवान द्वारा प्रदत्त है और इसके लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता है अथवा यह बताए कि ख जो मुसीबतें उठा रहा है वह इसलिए क्योंकि उसने पूर्वजन्म में बहुत पाप किए हैं। अथवा यह बताए कि ख को यह सोचकर अपनी किस्मत पर संतोष करना चाहिए कि स्वर्ग में उसे सारे सुख मिल जाएँगे। धर्म–कोई भी धर्म–क के लिए बहुत लाभप्रद है क्योंकि यह ऐसी शिक्षा देता है कि जिन स्थितियों में ख के ऊपर क सवारी गाँठ रहा है, वे स्थितियाँ मनुष्य द्वारा पैदा नहीं की गई हैं, वे ऐतिहासिक नहीं है। इसके विपरीत यह प्रकृति का एक सर्वमान्य नियम है जिसको ईश्वर की स्वीकृति मिली है। क यह चाहेगा कि ख के मन में यह बैठ जाए कि उसकी कोई संस्कृति नहीं है या अगर कोई संस्कृति है तो वह बहुत हीन है। इसीलिए क की कोशिश यह होगी कि वह ख को एक ऐसी संस्कृति से लैस करे जो उसके अंदर आत्मसंदेह, आत्मनिन्दा के मूल्यों को यानी गुलाम चेतना को विकसित करे।

अब वह क को एक संस्कृति वाला व्यक्ति समझेगा। संक्षेप में कहें तो क चाहेगा कि ख को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे उसमें अपनी इस वास्तविक स्थिति की समझ पैदा न हो सके कि उसके ऊपर क क्यों बैठा है अथवा उसे इस स्थिति के ऐतिहासिक मूल कारणों की जानकारी न हो सके। साथ ही क ऐसी संस्कृति भी प्रदान करना चाहेगा जो ख के अंदर दासता के मूल्यों, दास मानसिकता और इसी तरह के विश्व दृष्टिकोण को प्रतिष्ठित करे। ऐसा करके ख को अपने अधीन रखा जा सकता है। क केवल इतना ही नहीं चाहता कि ख उसका गुलाम बना रहे बल्कि यह भी चाहता है कि गुलाम बने होने को वह अपनी किस्मत का लेख मान ले।

दूसरी तरफ़ ख उस दर्शन को चाहेगा जो उसे बताए कि हर चीज में परिवर्तन होता है, कि परिवर्तन प्रकृति का और मानव समाज का एक सहज नियम है। वह उस धर्म को गले लगा लेगा जो यह शिक्षा देता हो कि कुछ लोगों के ऊपर कुछ लोगों के बैठने की प्रणाली ईश्वर के नियम के विरुद्ध है। हो सकता है ख अपने अतीत का पुनर्मूल्यांकन करना चाहे और इस प्रक्रिया में उसे पता चले कि वह हमेशा गुलाम नहीं था। इसलिए वह उस शिक्षा को गले लगायेगा जो उसे स्पष्ट रूप से यह बताए कि उसकी मौजूदा तकलीफ़ें इतिहासजन्य हैं–प्राकृतिक नहीं, जो उसे यह बताए कि यह स्थिति मनुष्य द्वारा तैयार की गयी है इसलिए मनुष्य इसे बदल भी सकता है। ख उस संस्कृति को गले लगायेगा जो उसके अंदर आत्मविश्वास और अपने पर गर्व करने के मूल्यों को स्थापित करे, ऐसे मूल्यों को स्थापित करे जिनसे उसे साहस मिलता हो और यह धारणा पुष्ट होती हो कि अपनी मौजूदा तकलीफों से छुटकारा पाने के लिए वह कुछ कर सकता है। संक्षेप में कहें तो ख ऐसी शिक्षा चाहेगा जो उसे न केवल उसकी मुसीबतों का ज्ञान कराए बल्कि उसके अंदर मुक्ति की चेतना, आजादी के लिए लड़ने की चेतना पैदा करे।

अब यह संभव है कि क और ख अनिवार्य रूप से उस तरह की शिक्षा, संस्कृति और विश्वदृष्टि के प्रति सजग न हों जो वे चाहते हों। लेकिन सच्चाई यह है कि ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जो इस तरह की संस्कृति प्रदान करती है जो क की स्थिति के अनुरूप चेतना लिए हुए है और एक इस तरह की शिक्षा पद्धति जो ख की स्थिति के अनुरूप हो। शिक्षा, संस्कृति और विश्वदृष्टिकोण के दो तरह के होने से एक घातक संघर्ष चलता रहता है क्योंकि क की लगातार कोशिश है कि ख गुलाम चेतना को अपना ले ताकि क शांतिपूर्वक ख का शोषण जारी रख सके। लेकिन ख भी एक ऐसी शिक्षा विकसित करने के लिए संघर्ष कर रहा है जो उसे मुक्त कराने की संस्कृति प्रदान करे और पूरे आत्मविश्वास के साथ क को अपने ऊपर से उठाकर फेंक दे।

●

मृत्यु से उतना मत डरो जितना कि अपर्याप्त जीवन से!

– बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

लोग जिस चीज में विश्वास करते है उस पर प्राय: अमल नहीं करते हैं। वे वह करते हैं जो सुविधाजनक है, फिर पछताते हैं।

– बॉब डिलन (मशहूर अमेरिकी गायक)

तुम नए महासागरों की खोज तब तब नहीं कर सकते जब तक तुममें किनारे को नजरों से ओझल करने का साहस नहीं हो।

– अज्ञात

घोषणापत्र : प्रपत्र 1

पत्रिका का नाम	- आह्वान कैम्पस टाइम्स
प्रकाशन का स्थान	- गोरखपुर
प्रकाशन अवधि	- त्रैमासिक
प्रकाशक/स्वामी का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रक का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर' कल्याणपुर, गोरखपुर
संपादक का नाम	- कविता/अभिनव
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली

मैं, आदेश सिंह, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अध्कितम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
आदेश सिंह
दिनांक : 31.1.2005 प्रकाशक/मुद्रक/स्वामी